भारतीय चिन्तन परम्परा में 'दर्शन' का अर्थ

भारतीय चिन्तन परम्परा में प्रयुक्त 'दर्शन' का शाब्दिक अर्थ 'दृष्टि' (Vision) है। यह साधारण अर्थ में प्रयुक्त 'देखना' (Seeing and Looking) क्रिया से भिन्न है। व्यवहार में 'दर्शन करना' और 'देखना' दोनों का प्रयोग अलग–अलग संदर्भों में किया जाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसका अर्थ तत्त्व का दर्शन, तत्त्व–ज्ञान अथवा तत्त्व का साक्षात्कार है। इस तत्त्व साक्षात्कार का लक्ष्य मानव–जीवन के समस्त दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति, अर्थात् समूल नाश है। इस प्रकार भारतीय दर्शन में इसे परा विद्या कहा गया है। दूसरे शब्दों में तत्त्व–साक्षात्कार, आत्म–साक्षात्कार, ब्रह्म–विद्या, निर्वाण एवं संबोधि, मोक्ष, कैवल्य, अपवर्ग आदि के साक्षात्कार या विवेक के लिए 'दर्शनशास्त्र' का प्रयोग किया जाता रहा है। इसके विपरीत भारत में लौकिक जीवन से सम्बन्धित ज्ञान को अपराविद्या के अनतर्गत सम्मिलित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय परम्परा में दर्शनशास्त्र धर्म (Religion) से स्वतंत्र नहीं है। यहाँ धर्म और दर्शन में अलगाव नहीं है। भारतीय दर्शन उस विवेक की खोज है जिसको जान लेने से जो अज्ञात है, वह सब ज्ञात हो जाता है। इस दृष्टि से दर्शन अशेष ज्ञान या सम्यक् ज्ञान है जिसको जान लेने से किसी वस्तु का ज्ञान शेष नहीं रहता है। उपनिषद् काल से लेकर आज तक भारतीय दर्शन अनेक सम्प्रदायों, विचारधाराओं और मत–मतान्तरों में विभक्त रहा है। किन्तु सभी सम्प्रदायों के दार्शनिक अनुशीलन का लक्ष्य समस्त दुःखों से पूर्णतया मुक्त होना रहा है।